



INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Assignment Submission for Term-End Exam June - 2024

ENROLLMENT NUMBER : 2 2 S 4 7 0 3 0 8 2

NAME OF THE STUDENT : NIKITA CHAUHAN

STUDENT ADDRESS : Atbarpur, Bahadarpur, Ghaziabad, UP

PROGRAMME TITLE & CODE : MHD ; Master of Arts (Hindi)

COURSE TITLE : Bhartiya Lokonni

COURSE CODE : MHD-12

REGIONAL CENTRE NAME & CODE : 01 ; Delhi 1 (Mohani estate (South Delhi))

STUDY CENTRE NAME & CODE : D110 ; Dashbandhu College (7th)

MOBILE NUMBER : 7 3 0 3 8 2 2 4 1 2

E-MAIL ID : nititachauhan7338@gmail.com

DATE OF SUBMISSION: 26 - 07 - 2024

Nikita
(SIGNATURE OF THE STUDENT)



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

Indira Gandhi National Open University
Maidan Garhi, New Delhi - 110068



IGNOU - Student Identity Card

Enrolment Number : 2254703082

RC Code :

07: DELHI 1 (MOHAN ESTATE (SOUTH DELHI))

Name of the
Programme :

MHD : MASTER OF ARTS (HINDI)

Name :

NIKITA CHAUHAN

Father's Name :

VEERPAL SINGH CHAUHAN

2254703082

Address :

HOUSE NO 186 GALLI NO 2 , BUDH VIHAR
AKBARPUR BAHARAMPUR
GHAZIABADGHAZIABAD UTTAR PRADESH

Pin Code :

201009

Instructions :

1. This card should be produced on demand at the Study Center, Examination Center or any other Establishment of IGNOU to use its facilities.
2. The facilities would be available only relating to the Programme/course for which the student is registered.
3. This ID Card is generated online. Students are advised to take a color print of this ID Card and get it laminated.
4. The student details can be cross checked with the QR Code at www.ignou.ac.in



Nikita

Registrar
Student Registration Division

एम. एच. डी.-12
 भारतीय कहानी
 सत्रीय कार्य
 (सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-12
 सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-12 / टी.एम.ए. / 2023-2024
 कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:

$10 \times 2 = 20$

(क) प्रेस में विनायक को छोड़कर और कोई नहीं था। उस दिन के लिए तयशुदा कार्य में दो काम बाकी थे – पहला, दो निमन्त्रण-पत्र कम्पोज करके उसका प्रूफ निकालना और दूसरा, प्रूफ – शोधन किये अभिनन्दन पत्र में 'करेक्शन' लगाकर छापना।

'छापने के लिए कागज भी तो काटना होगा।' बुदबुदाते हुए जब वह ट्रेडिल में कसे हुए 'चेस' को खोल रहा था, उसके मन में एक छोटी-सी आशा अंकुरित हुई— बहुत सी साधारण इच्छा, आप चाहें तो बचपना भी कह सकते हैं।

चेस को खोलकर 'स्टोन' पर रखा। वह भी एक विवाह निमन्त्रण कार्ड को ही मैटर था। विनायक ने मैटर में वर के नामवाले अक्षरों को ब्रश से पोछा। स्याही हट जाने पर चाँदी की तरह उजले अक्षर चमक उठे।

'चिरंजीव श्रीधर'— इन अक्षरों के टाइप-दायी से बायीं ओर जैसा कि आइने में प्रतिबिम्बित होता है — साफ दिखाई दिये।

(ख) ठहरो! ठहरो!" कहते हुए हाथ उठाकर उसने दोनों पक्षों को शांत किया। फिर उसने दोनों पक्षों से पूछा, "क्या बात है मैया, क्या मामला है?" उसका रवर, उसकी अवरथा और पहनावा वृद्धा देखते ही वृद्धा की हिम्मत बँधी। आवाज कुछ धीमी करके यथासंभव सद्भाव के साथ वह बात बताने लगी, "तुम्हीं बताओ बेटी! यह लोग पानी के लिए आई हैं। यह कोई सरकारी नल तो नहीं है न? पैसा खर्च करके लगाया हुआ है। हर साल म्यूनिसपैलिटी को हम टैक्स भी देते हैं। ऐसे में पहले हमारे बच्चों ने आकर मना किया। इन लोगों ने बात सुनी नहीं। फिर मैंने आकर मना किया। फिर हमारा माली आया, तो वह लड़की कहती है— अगर तू मर्द हैं, तो कुत्ता छोड़!" देखो तो उँगली — भर नहीं है लड़की!" कहकर उँगली से सत्यवती की ओर वृद्धा ने इशारा किया।

(ग) उसके तूसरे दिन फिर झुंकती राँड़ा की बेला में बाघ की दहाड़ सुनाई पढ़ी। वह सच्चान होकर गरजता धूम रहा है, सचमुच जैसे गरगराती आवाज में संदेश दे रहा है, "यहाँ गेरे पुरखों के जमाने से बाघ का सिंहासन था, वन का राजा है बाघ, और अगर बाघ नहीं है तो बाधिन, बाघ के वंश का जो कोई भी बात एक ही है। यीच में पता नहीं कैसे कुछ दिन खाली रह गए थे। लेकिन मैं फिर लौटा हूँ, इस वंश का अटूट क्रम फिर शुरू हो गया।" फिर सारी रात पहर-पहर चिल्लाते रहे सियार, सचमुच जैसे कि वे बाघ युवराज या बाघ युवरानी के भाट थे। लेडेंग के कुछ लोग इस तरह से भी रोच रहे थे जैसे खुद धूर्व सिंह। पहली रात को गरजते — गरजते बाघ चला गया कहीं दूर और फिर एक साथ अचानक सियारों ने चिल्लाना शुरू कर दिया जैसे जान बचाने के लिए ही वे इस तरह चीख रहे हों। चिल्लाना बंद हुआ कि जान गई।

2. 'ट्रेडिल' कहानी के कथानक का विश्लेषण कीजिए। 16
3. 'अपने लिए शोकगीत' कहानी के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। 16
4. 'बघेई' कहानी का कथानक बताते हुए उसके महत्व की चर्चा कीजिए। 16
5. कॉकणी कहानी संसार का सामान्य परिचय देते हुए 'ओड़रे चुरुंगन मेरे.....' कहानी का महत्व स्पष्ट कीजिए। 16
6. दीनानाथ नादिम का परिचय देते हुए उनकी कहानी 'जवाबी कार्ड' का विश्लेषण कीजिए। 16

१८. १८. ८०८८ - १२

भारतीय कथानी

अभी प्रश्नों के उल्लेख दीजिए।

(१) विभागित में संभव साहेत १५०० या जीवितः

(क) प्रेस में ----- दिखाई दिये।

- संभव व प्रसंगः-

प्रस्तुत अपताण ताजिले साहित्य के महान्
दृष्टाकर्ता डॉ. खण्डालिन ने शुभानिष्ठ कथानी ट्रॉडिल से
उद्धारित है। इन पालियो में प्रेस में जारी रखे गए बाल्लों
मन्दूर विनायक मूर्ति की मनावृति और जारी रखी गई
सिर्फ उपस्थित हुआ है।

१५०० या :-

धारेवाने ने रुपुले हुए लीक साले तुच्छ महीने
हुए हैं। इसकी ज्ञाई से भाजिक मुरागें मुदालियाँ न
एं भकान घनवा लिया है। कम्पोजिट, लाईट, मीलभैंड
इत्यांकी जूगिलो तिभाके वालों का ही व्याप्ति है, जिसमें
जारी विनायकमूर्ति है। १६३ इस धारेवाने में असली मेहनत
लिया है। उसकी मेहनत ने पारियाँ चरक्षण धारेवाने की
अवधी ज्ञाई दीती है। धारेवाने में इस दिन विद्यार्थित
लिए गए जारी में दो जारी बाकी दो-पहला दो निर्वाण
पर्याय जारी करने के लिए उसका उपकार त्रॉडिल-गोल्ड आमिक्सन
पर्याय में कार्बनिक लगाकर बिनाइए और इसका फूफ लगाया।
जिसके के लिए लागे लागे धमा है। १६३ तक हुए ज्ञाई

१५७६ ते हुआ जब विनायक मूर्ति ट्रेडिल मे कभी हुआ पैशा ना
 रखले १६ घा, तेहो मन से अन धारी सी साध्या १०८ इवा
 अंकुरित हुई, जिसे बचपना भी ऐ समझते हैं। विनायक मूर्ति
 ने प्रेस को रखलाकर 'कठोर' ५८ १२ घा | १६८ ५८ १२ विवाद
 विभिन्नों गई लो ही ५८ आंखुद था। ३६६ों गई ५८ मे
 पर के नामवले अकारों लो छवा और से पाठों चयाही हट
 खाने पर चाँदी की तरह उसे अकार प्रभक उठे। उसे पर
 दाढ़ी ए जाही और लिपा हुआ अकार प्रिंजीप-क्रीष्ण आइने
 मे प्रतिविम्बित दिला है आक-थाक दिखाई दे १६ घा।

विशेष :-

- ① यह मनुष्य के भगवन बनने की मानिक गणी है।
- ② मानिक और अभियारी संबंधो ना विश्लेषण।
- ③ प्रेस की कार्यशैली ना विश्लेषण।
- ④ सद्ध और विचारभक्त भाषा भैली

प्रासंगिकता :-

डी. जयकांतन ने श्री. ट्रेडिल के माध्यमे
 से वापेसाने मे काम कर १६ मजदूर जी अपेक्षित ना
 मानिक प्रित्यां लिया है। ४८ ५८ १२ मजदूर विनायक मूर्ति
 के भगवन बनने जी और समझते लिया गया है। वर्तमान
 समय मे मनुष्य के भगवन मे उद्दलने जी यह १६८ प्रेक्षिति
 और जी भव्यावह दिली जा रही है।

सप्रसंग व्याप्त्या इन उत्तरी नीशाल्प हैं जो इन व्याप्ति
 ने लिए १६८८ ग्रन्थ पाठ या ग्राहा आधा के अर्थ
 में अभिज्ञे में महद गति है। यह वह लाभ दरिजा है
 जिससे इन इन वाक्यों या पैराग्राफ के अर्थ जो अभिज्ञ
 भवते हैं। सप्रसंग व्याप्त्या ने इस धर्म दिन १६८८ पाठ
 के अर्थ जो वहाँ हुए से समझ सकते हैं के बारे में
 जिका है; जो भवते के समान है। उत्तरी श्चिति में मुख्य
 भौजता है ज्यांकि उसे ८९ नहीं लगता है। अब जाइ
 उभका कुछ नहीं किया। जगता है। अतः वह प्रश्न जल्द
 हुआ प्रतीत होता है कि मतुष्य जो ८९ लिखसे लगता है।

पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता ने इन प्रमुख व्यवसाय हैं,
 जिसमें समाचारों का सांकेतिक, लिखना, बाबनारी
 ज्ञानित जैसे पहुँचाना, सम्पादिता करना और सम्प्रयोग
 प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित है। आध जो युग में
 पत्रकारिता के जी अभी माध्यम हो गये हैं; जैसे—
 अखबार, पत्रिकाएँ, रेडियोः, टेलीविजन, वेब - पत्रकारिता आदि।
 वहलते कर्ता ने आध जाख रखाएँ और पत्रकारिता के
 अवसरों द्वारा पत्रकारिता ने विषय-वस्तु तथा प्रस्तुति
 अपनी में व्यापक परिवर्तन किया। यह जी भारतीय रेलवे
 के लिए "दृष्टि और विषय ना वर्ष" १९८८। प्रधानमंत्री के
 माध्यमिक और उनके विभिन्न के तहत भवित जैसे वाजी
 और अशूतपूर्व चुनावियों जो सामना कर रहे हैं।

(४) ०६२९ ! ०६२९ ! " -
- संवेद ए प्रसंग :-

इतर लिखा

उपर्युक्त पाणीयों तेजुरु लाली के दुर्ग प्रवर्ति
साहित्यकार श्री जालीपट्टम १८८१वं नी भवनादी लाली प्राग्वारा
से लिपि गया है। इन पाणीयों के माध्यम से सामाजिक विषयों के
लाली साधनहीन लोगों के जीवन की अडिाश्यों पर्यंत उपर्युक्त
संपर्क वर्ष नी आमरत और स्वार्थी मनोवृत्ति ने गहराई से
प्रभुत लिया है।

०५८०५ :-

जब पानी लो पाने लो तेजुर विवाद पूछा है, तब
सबकी बात सुनने के बाद उन लियों में से एक अध्यायम् भा
मह्यस्थ श्री बनती हुई लीच में आमर लाली है। ०६२९ ! ०६२९ !
लाली हुई दाढ़ ३६४८ लोनी पक्षों लो चांत लिया। किर
ठसने लोनी पक्षों से पूछा की समस्या ज्ञान है? उसली बात
सुनना लोनी सामने रखी रुद्धा नी हिंमत बंधी। १८ सावाज
कुछ धीमी लाले वयस्संभव सक्षम के साथ अपनी बात बताई
जाए, "तुम्ही बताओ बेती। ते लोग पानी के लिए यहाँ पर
आयी हैं। यहाँ पर मौजूद लल नाई सरलारी नल ते नहीं हैं न?
मने धसा रख्य करके लगाया है। १८ साल मृशनिसधिलिंगी जो
धम टैक्स जी दते हैं। ऐसे मे पहले द्यारे बर्धों ने आगर
मना किया और पानी नहीं लेने लो लदा। १८ लोगों ने
बात नहीं कुरी। किर भंने मना किया किर द्यारा माली आया
आई हुए लोगों लो मना किया। तो १८ लोगों लाली लगी—
अगर दु भर्द हैं, तो तुला धाइ। देखो तो डंगली से
सर्ववादी नी और रुद्धा ने इतर लिया।

विशेष :-

- ① पानी की जली जी समस्याओं का विकास।
- ② सामाजिक विभागों का विवर।
- ③ साधनहीनों की विषयता का अधिवेशन।
- ④ जूरियांगों की जी जलोदृष्टि का अध्ययन।
- ⑤ जलव आण उत्पाद शब्दों।

प्रारंभिकता :-

प्रारंभिकता के मालिक से इमाराफ जी पर्सी के अद्वितीय जो प्रतिपादित जाते हैं और गढ़ते हैं तो पर्सी के विवाह भी विशेषज्ञ हैं। प्रारंभिक धरा अत जंसाधन को साधन अभ्यास कुराफ्यांग और इस है जिससे कई बड़ा है गंभीर खल संगठन जी अभ्यास अध्ययन ही गई है। पर्सी जा द्वितीय सुप्रभोग जाता पाइक तक लोगों जो इस प्राप्त गर्व के गाँड़ियाँ जा समझा न जाना पड़े जिससे ने पृथक् घारे बच्चों ने आगर नहा दिया। पर्सी नहीं में पृथक् जो गढ़। इन लोगों ने अत नहीं जुरी। किंतु मौण १६ लड़कों जहाँ लड़ी — अगर तू भड़ी है, तो जुला घाइ निर उसने नहीं पक्का से पृथक् ताथ जी दूरी।

पर्सी जा द्वितीय सुप्रभोग जाना पाइक तक लोगों जो इस प्राप्त प्राप्त जाते हैं। पर्सी की जाती अभ्यास के अभ्यास अवशो विषय होते हैं और उन लोगों इसका पृथक् भी नहीं है। अर जबकि ही गढ़ जी पर्सी जो व्यापार माँ र द्वितीय तके इन लोगों वे जल नहीं दिया। पर्सी नहीं तो पृथक् जो गढ़। इन लोगों वे ही जीता है तो पर्सी जा सुप्रभोग गर्व की जाँचीय नहीं।

② 'द्रूडिल' काशनी के अधारक का विवरण कीजिए।
 - तमिल साहित्य के अवशेषित स्वतन्त्रार्थी ही. जयकांतन जी द्वारा रचित द्रूडिल एक कालाजी काशनी है। जयकांतन जी ने अपने साहित्य में अभाज और मात्रा जीवन का जीवन स्थिर प्रस्तुत किया है। कौ. ए. जमुना ने जयकांतन जी की काशनी को ज्ञाने में लिखा है "जयकांतन अभाज के प्रथेक वर्ग के ज्ञानी जी परिस्थितियों, उभारी सभ्याओं से परिपूर्ण है। उनकी काशनी में अकेले पात्रमुख्य भार्ता का प्रयोग दृष्टिगत होता है। 'एवं जयकांतन जी अपनी काशनी के लाएँ में अहं है' कि "मेरी काशनी खाली अभ्यर्थ विताने अपराध की भवय नहीं करते जा एक अपार्व वही है।"

काशनी के मुख्य पात्र का नाम विनयकमूर्ति है। १८ अभावों में जीवन अतीत करने वाला एक पात्र है। द्रूडिल काशनी के माध्यम से धारेवाने में लार्यिट अनदूर ने जीवन की सामाजिक और आर्थिक स्थिति जो आव्याहन जाने के साथ आप उसके जीवन की वास्तविकताओं जो अत्यंत संकेतशीलग जो आप उदाहित किया गया है। काशनी के अंत में त्रिविक्रममूर्ति द्रूडिल प्रभीव जी तरह आप नहीं जगता है। अपर्याप्त वह मनीन जी तरह आवना दीन रुद जो मद्युक्ष जाता है।

द्रूडिल काशनी का अधारक :-

द्रूडिल काशनी धारेवाने

की कार्यशाली के वर्णन के साथ-साथ, मनदूर-मालिक संबंध, मनदूर वर्ग की लक्ष्य जिंदगी, आर्थिक ज्ञाने एवं इंजीनियरिंग विद्या, अवस्था, प्रसाद परिवार और मनुष्य के नियन जनकों की ज्ञानका जो प्रस्तुत होती है।

धारेवाने की नायिकाली जा १०८ :-

द्रुटिल

जहांनी जा संकल्प धारेवाने से है। द्रुटिल वह मन्त्रीन है जिसे पाँच जी सदाचता से बचाया जाता है। इस मन्त्रीन के द्वारा धर्माई जा जाने दाता है, गणेश, मणिक, इन्द्र, कठि, दोष - स्त्रीहारि जा सतीक चित्रांग जहांनी प्रे द्वुआ है। ऐसा भागता है मर्मा जहांनीजा जा गाहुर भवार उस प्रेस जी धारी-सी-धारी लीज के बारे में आपको जला रहा है।

मन्दूर जी एप्ट्रि जा मार्गिक चित्रांग :-

द्रुटिल

जहांनी कि अनुआत धारेवाने मेरेले मन्त्रीन के बजे से दाता है। जहांनी के अनुसार धारेवाने जा रुहे दुःख विस साल छुद मन्त्रीने दुःख है। इसी धारेवाने जी ज्ञाई से धारेवाने के मालिक मुख्यमंत्री चुकियर ने १२५ माहान बनवा लिया है। १२५ जूलाइ, १९२०८९ मन्त्रीनप्रैर्ण इन सभी जी भूमिका निभावे वाला जा ही ज्ञात है जिसका जारी कियायकायुर्ति है। इस धारेवाने प्रे असलो मेधनत विनायकायुर्ति ही जरत है। उसी जी मेधनत ने परिणाम स्वरूप धारेवाने से आवश्यक ज्ञाई दाता है। धारेवाने जी भारी जमाई विनायकायुर्ति की प्रेषनत जा नवीजा है लेकिन विनायकायुर्ति जा मन्त्रीने से २० साल १५५ दी जिबन है। १२ साल से विनायकायुर्ति यह जारी रहा रहा है। जहांनीजा + धारेवाने + जमाई जा रहा है। विनायकायुर्ति जी परिस्थिति और मनोवृत्ति के माध्यम से मन्दूर एप्ट्रि जा मार्गिक चित्रांग लिया है।

मालिक और अभियारी के संबंधों का विवरण :-

मालिक

आरु अभियारी १५-८०८० के पुरुष होते हैं और एक दूसरे के बिना नहीं जा सकते। आस्तीन नहीं होता है। कोई भी उधोग संस्थान, व्यवसाय, दुकान आदि है तो मालिक और अभियारी भी इसापिक रूप से होते हैं। मालिक और अभियारी दोनों के बीच इतार छेद होता है जो १५-८०८० का पुरुष-पुरुष रसायन रखता है। दूसरे गली मालिक-अभियारी के संबंधों का सूक्ष्म उद्घाटन करती है। प्रेस के मालिक जो जाम मुद्रित्यारूप है और विनायनमूलि इस प्रेस के अभियारी का वापर है। दूसरे मगीन अधिकारी लंदं हो जाती है तो मालिक क्षेत्रीय व्यवसाय जाता है। लम्ही मुद्रित्यारूप के क्षेत्रीय जी आवाज़ी, "अबैं मगीन ज्यो बन्द नहीं है ?" गुडग अभीर आने वाली है ?" भवर्भी ?"

"हीक है ! एक चर्चा की देना मालिक ! सुबह नाश्ता नहीं। गिरा। अभी

आकर जाम पुरा नहीं हुआ।"

"जल्दी आ जा जा, जाम बहुत ज्यादा है।" "मुद्रित्यारूप के क्षेत्रीय व्यवसाय में ५० रुपये ही

"अच्छा मालिक !" बहस्तर जवाब दिया और एक जल्द आगे उत्तरा करता है। "इतवार" का मैं अपनी दीदी के बहुत गम्भीर पांच दशाती थी, उसने

एक बड़ी देखरेखी है..."

इसके आगे भीड़ी नहीं प्रिया। जान यह नहीं था, कि सरातर छुट लोल रहा था। उसे सरब जा जायी थी। "अहे है... २१६१ की बात नहीं है... अच्छी बात है हहह ! गजेलजे से भाष नहीं होता।" मुद्रित्यारूप के मुद्रित भाष से नहीं। "मालिक... इसके लिए भी रापथ की प्रशारी..."

"प्रिया नाहे बाबा है ? ... वह सब हो जाओगा। तू पहले बात प्राप्ती करा लो।" मुद्रित्यारूप से क्षण सुनना था कि विनायन कुलग न आया।

मनुष्य के मरीन बनने की प्रक्रिया:-

यदि सूक्ष्म - २५

की देख तो ड्रेटिंग गारी में मनुष्य के मरीन बनने की प्रक्रिया परिभासित होता है। मुद्रियार के लाएं जो उद्द विनायक ड्रेटिंग प्रबलाने में जगा तभी अपारक उसके ज़ंघे के ऊर्ध्वर्द्ध दोनों भाग दो इतना च्यापा था कि विनायक की वीर्य प्रिलजे गई। १२वीं दर्जे में जैसे-तरह ध्याई जो नाम छुट्टा जिया। ध्याई जो उद्द जैसे-तरह डॉक्टर के पास विनायक पूर्णपा वहाँ आगे चुला तो उसका दर्शक दर्शिया लाभक विमर्शी हो गया है। डॉक्टर ने उसके बाहर जो जगाने वाले अंग इत्यापि जैसे तो च्यापा फूर्ह तर्ह गई तरह चुलीपर्सी के प्रबालियों ने प्रयाग जगा छुट्टा गहरा जिया।

इस अवधि गुरुजैव के उद्द विनायकमूर्ति जो आपरेशन दुआ। १२ महीने उद्द उक्त विनायकमूर्ति जो छुट्टी लियी तो डॉक्टर ने उसे गारी तर जाने की सलाह दी। डॉक्टर ने गहर जैसी इच्छा तुम्हें होगी ही नहीं जेलिंग लिए तो दबाएं ऐ आकर जी आदि तर जैल। विनायक का इन दो दिन आ रहे जी आज इसे गया। विनायकमूर्ति जैसे अपने नाम पर वापस लौटा तो मुद्रियार ने घताया तो आई जी विनायक जो विनायकमूर्ति की जैल जार नहीं रह पाया, साथ दो विनायकमूर्ति जी आमदी में १०५५५ रुपों के देने जो असला विनायक जो छुट्टीया। विवाह के लिए १००१५५ जी उद्द अंसुला विनायक जो छुट्टीया। विवाह के लिए १००१५५ जी उद्द अंसुला विनायक जो छुट्टीया। अब उस विनायक जो नाम पर जगा। उसे १२ ड्रेटिंग मरीन जो उसे रखुद जी मरीन उन दुनों था।

विनायकमूर्ति जब अपने जन्म पर वापस आएंगे तो मुद्रालिपारन लतामा
की गई जी विनायकमूर्ति की ऐसे जन्म नहीं हो पाया, साथ
ही विनायकमूर्ति की अग्रदली में 100x40 लकड़कर देते जा कंभजा
विनायक जो खुलाया। विवाह के लिए 100x40 जी छुद्ध दिन लाए
देते की बीते फही । यह सब सुनकर विनायक मुहँ । देखा कर
रोने लगा। अब जब विनायक जन्म 40 लकड़ तक वह दौड़िल
मध्यीन के साथ रुद्ध जी अग्रीन कह चुका था।

२८ ते विरवरते अपनों की आशियानी :—

दूरिक्षा लानी

में १९ अंडूरे के अमालग्रहण जिद्दी, ३१ के मध्यीन में तहलील
दाने की गासदी के साथ-साथ इसके विरवरते अपनों की
आशियानी हुई है। विनायकमूर्ति ने अपने विवाह के लिम्बंग
पर लाए हैं, लेकिन रुद्ध उसके विवाह जो लिम्बंग पर तही लगा है।
विनायक मूर्ति जो जी अपना था - १७१९ लंड जो अपना।
धर रखाने जो अपना। इनिया वीमारी दाने के पश्चात जब
उन्हें डॉक्टर जीवन भर शादी न करने जो समाज देता है।
तो उसके पिछले १२ वर्षों से भजाया - संवारा गया सपनों
खर-खर दो खाता है।

झूँझीवादी व्यवस्था का दुष्प्रारिणी :—

अंधारिक जानि

के परिवास चक्रांत झूँझीवादी व्यवस्था ते अपना पैर जमा
लिया है। झूँझीवादी व्यवस्था के पारिणी अवस्था जिनका
कर्ता रवांडा हो गया है जिसे अंडूर पर्स के नाम से
भाला गया। आठ के दशक में जिस लह झूँझी जाकरें
हो रहा था।

असे क्या यह है! आखले ३०८०-सीधा नाम लेने का गया है, क्या लत है? अरे, किसने उसे डिस्ट्रिक्ट एवं लो है?... सहस्र जाते हुए मैं नॉन-सा नाम लाने गया और तू ज्ञा नाम ले रहा है।... मैंने यह भा कि जा नाम पूरा करने के लिए अँगिनवन - पत्र को भविन पर चढ़ा है... हाँ, यह बहुत खूबी है। मुद्रियार् विलापे।

"कर्द्धा, आभिक! " बहसूर जवाह देवता विनायक नाम से भशायुल हो गया।

"याहे रात हो जाओ, आज उसे पूरा करना ही ही!"
मुद्रियार् जा हुआ।

१५ ओर शुभा लगता है तो ६सरी ओर भव ही बन मुराग्रा मुद्रियार् सोचता है कि यह किसी नाम जाता है। विनायककृति की शादी में मुराग्रा मुद्रियार् के बन मैं रथ-पर्व लेने ही कठिन होती है। दूरिल गद्धी हुंडीवादी अवस्था जा त्रासद परिवार और संलग्न रही है।

विष्णुर्स रूप से यह सोता है कि ताजिल साहित्यार् जयनाम जी इस रथित लकड़ी दूरिल में उस भजदूर जी भजदूर स्थिति और परिस्थिति जो परिभ्रष्ट रहा गया है। भजदूर का न सपने खोटे-खोटे होते हैं, उसे भुजे जाने में उसके डाने का जाठिनाई जो सपना लेना पड़ता है। उनके सपने सामाजिक जीवन व्यतीत लेने की मुख्य आवश्यकता और संवादित होते हैं। विनायक कृति जो जी किए जाएं जो सपना था।

कर्म विद्या के लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना।

अपने जीवन का अधिकारी कैसे बनिएः—

जीवन का अधिकारी बनने के लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना। इसके लिए जीवन के अधिकारी के रूप में जीवन का अधिकारी होना।

दैनिक जीवन की अवधारणा क्या हैः—

दैनिक जीवन की अवधारणा में अमानुषीय व्यवहार एवं अद्वितीय गति देखी जाती है। दैनिक जीवन की अवधारणा में छोटी-छोटी घटनाएँ ज्ञानी ज्ञानविदों के अनुच्छेद जैसी हैं। प्रारंभिक अवधारणा में उनकी समाजिक अवधारणी में विशेष अनुच्छेद देखी जाती है। इसका समाजिक अवधारणी अवधारणी की ओरी।

आशाधूर्जी देवी अपने लिए शोकगीत गानी में दैविक जीवन की सामाजिक वर्गाओं को उद्घाटित करती हैं।

२१वें की लिमटी दुनिया का इतिहासः—

अपने लिए

शोकगीत गानी की रूपताथारे आशाधूर्जी देवी जी हैं, जिन्होंने अहं गानी का भास्त्र में लिखी थी। अपने लिए शोकगीत गानी रिटायर्ड व्यक्ति अविलाश की है, जो अपने ही परिवार में शुद्ध जो अकेला समझते जाते हैं। जिसका मुख्य लाभ यह है कि उनकी पत्नी अपने पति से ज्यादा अपने परिवार के अन्य सदस्यों पर ध्यान देती है। अविलाश इतना अकेला महसूस करने लगते हैं कि इन्हें जी ही भूतभुजे जी कल्पना करने लगते हैं। आविनाश का बच्चे, बहु, पोते-पोती और पत्नी से भर्त पूर्ण परिवार हैं। अगर उनको लगता है कि वह अपने धर्म में अप्राप्तिग्रीष्मा हो गए हैं, अफेले दो गए हैं। जोड़ उनका १५१ लाखी ११९ वर्षा। सब अपनी-अपनी धूम में भरत और अस्त हैं। उनके साने-पीछे, शाँक वर्जिन हो गई तब्जियों नहीं देता। यह सब में उनके लिए सबसे तबाहीदेह है कि पत्नी गंभीरभाव से उनसे दूर हो गई है। बच्चे बहुओं और पोतियों जी दुनिया में १२५ गई हैं। जिस अविलाश जी ने वह जो बनाने वाले सभी में अपना अंधूर्जी जीवन लगा दिया। अब वे उसके दूर कोबे में डाल दिए गए हैं। जो संकरे जमरे में जो पतले से विस्तर तक उनकी दुनिया लिमिट गई है। जिस वहाँ वे अन्य सद्बूझ भृत्यों नहीं जाएंगे। जिस अविलाश जी ने वह जो बनाने वाले सभी में उनका अंधूर्जी जीवन लगा दिया।

धर के अंदर की दुनिया जा पितृणः—

आश्रमी देवी

बांझा भाईये नी उसी अपार्टमेंट है; जिसके दर्शन के लिए
जी सभक्षयाओं और आर्ट मनुष्य जी कुप्रतापी, विंडवलाओं को
रेवांगिम लिया। आश्रमी देवी जी ने मनुष्य जी का स्वतंत्र
कार्य का रूप में देवरा सुना किया। अपने लिए आकृति गढ़नी
में धर के अंदर की दुनिया जा पितृण आश्रमी जी ने धृत
की शरीरी से किया है।

अपनी और हथाल आठवाँ बाँड़ी की जागीरः—

आविना श

जो छुश्ह-छुश्ह घूस्ख लगती है लिंग १६ लिंग से १७ लाला फैंग त
लही है। वह ने लिंग रिकिंग लग १८ लाला है। पांचवीं को
लिंग जी चुमिया, इलवा, आख्य लिंग आदि पक्ष १९ लाली है।
सांवं जी रुश्श भै १६ और आधिक व्येन हो जाते हैं।

१७७२ छुलाने के बहाने १६ अपनी पत्नी के पास जाना
१७७२ चाहते हैं। भारू पक्ष से डेंट कोई प्रतिक्रिया नहीं लिभती।
आविना श जाते हैं कि झंबलबाला जो बन लगवाए ने जोई लायी
लही है, इसमें विषय बदल देते हैं और रसीद में पक्ष १८ लीचो
के बारे में चर्चा चर्चा है— "ल्ला पक्ष १८ ली हो। लगता है
इलवा बना १९ हो। आख्य-लिंग पक्ष २० हो ज्या? नहीं,"

शास्त्र अंडा चुमिया बना १९ हो। इलवा में यो सूक्ष्म
के तेज के पक्षा १८ ली है। रुश्श तो अच्छी आ रही है।
"सर्व यह है कि द चाहते हैं कि डवली पत्नी ३०-५०
हथाल द०। उन्हें आधन के लिए इच्छा। पत्नी झंबलबाला आविना श
बाल के अल नी जात है।"

बुधुर्ग की भनः स्थिति व परिस्थिति ना विश्लेषणः—

ज्येष्ठे लिख संभित

गदानी बुधुर्ग की भनः स्थिति और परिस्थिति ना विश्लेषण सहीका विश्लेषण जाती है। यह ग्रन्थ अविनाश नाम के एक बुधुर्ग की गदानी नहीं है। यह बुधुर्ग का ना प्रातिवाधिक जाती है। ज्येष्ठे संभित गदानी इस लत की ओर संलग्न जाती है कि बुधों ने चुका दुआ विष्णु व मानकर उनकी कर्दाओं का भम्भान लिया थाना चाहिए।

अकेलेपन और अलगाव से उपर्युक्त प्राप्ति प्राप्ति:-

गदानी की बुधुर्गात आधी एत लो अवानक अविनाश ने नीदं रुद्धने से दूती है। अविनाश ना एवं बुट रुद्ध होता है, साथ ही वह ज्येष्ठे वृष्टि नहीं होता है। इला पा रहे हैं। वाती मे अव्याधिक एवं के परिवार वृष्टिप्र अविनाश लो भग उहै। एक ना दौरा पड़ा है। अविनाश एवं मे विनाश के जारी याद लाए हैं यो कि दिन मे तो अष्ट ठीक या किर यह एवं जैसे दो गया है। इसी एवं से यह विल पड़े ज्येष्ठे उन्हीं आवाज नहीं।

निम्नलिखित | अविनाश ना आरा खाता है जिसे सोने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है। उपर्युक्त अपनी पोती के साथ आविनाश और गोलभाला के पुराने अर्दे मे भीती है, अविनाश ना अलग एवं बहुत ही घाटे अमरे से सीना पड़ता है। भाई देव लाद अविनाश जी ने पोती के अलभाग नी आवाज लगाई "विदा, ओ विदा, देखो ते दादु पता नहीं लेखे चिल्ला रहे हैं।" इस स्थिति मे अविनाश लोयते हैं कि परिवार के सभी सदृश अपनी तीमरदारी मे जग जाएंगे।

धर्म में उल्लंघन बहुत जाता है। परन्तु वही शांखभाला उनके परिणाम पर ही वैष्णव नहीं रहते वह देवमाते होती। परन्तु वही शांखभाला उनकी कल्प देवता है और धर्माता भी है। अब वही गम्भीर भगवान् एवं अपने अपने कर्म से भी यात्रा करते हैं। तब अविनाश लक्ष्मी की सरी इत्थाँ धराशायी हो जाती है। जामना बरते हैं कि वह ही याते तो वेदतर्थ भा। इससे अंदर ज्ञानाचार्या भासता है कि इस अकल्पन और अलगाव से अपनी पक्षी गणीय है।

आरां एष में जट लकते हैं कि भगवान् जो अज्ञान देवा गया है कि कुछ भी जो अवदेखा लिया जाता है। इस जटानी से अविनाश मानान्तर्मत एष से अनेक हो गए हैं। अपने लिए शांखभाला की तीव्र गति से लक्ष्मी दर्शन - ज्ञान - अविनाश तथा उत्तम अप्याद और अलगाव की एक जीवंत लक्ष्मी फ़स्तुक जरती है। माता-पिता जो एकाल दे देता ही अब कुछ नहीं होता है, उह हैं सम्भाल व समर्थ भी देने जी आपशमता है। शांखभाला तो सरा दिन अपने धर्म के नाम और लक्ष्यों से व्यस्त रहती है। जीवित अविनाश लक्ष्मी लिसे अब इस आमृते में भाँका भिजा है कि जट कुरुक्षत के पक्ष अपनी पक्षी के साथ उपर्याना चाहता है। जीवित उल्लंघनी पक्षी के लक्ष्यों द्वारा उह है अनेक लक्ष्य में रहने के लिए अध्य जरूर दिया जाता है। अपने लिए शांखभाला की मानिक जटानी है। शांखभाला तो सारा दिन अपने धर्म के नाम और आमृते में भाँका भिजा है कि वह कुरुक्षत के पक्ष लक्ष्य नहीं दिया जाता है। अपने दूर शांखभाला की लक्ष्मी और भायार उल्लंघन के मनःस्थिति और विषय की मानिक जटानी है।

④ 'बधैर्दि' गदानी का कथानक बताते हुए उसके महव जी
—पर्याजीलिए।

— गोपीनाथ महंति जी जी गदानीयां मानव की रक्षा वं मनुष्यता की
तत्त्वाओं परती है। जनजाति और आदिवासी जीवन को सिवित जैसे
तथा शोधणा पीड़ा और ठेक्षण से भ्रे जीवन को स्पाचेत लखने में
के समर्थ है। प्रोफेसर सर्थ काशी मोहनी गहत है— "मेरी साध
में, गोपीनाथ मोहनी लीखवी शताब्दी के उत्तरार्थ में सबसे
महत्वपूर्ण भारतीय उपचासगार है।" ओडिशा प्रशासन सेवा में
अस्थित मोहनी ने अपने तकानों में लिखे अनुभवों को लागड़ पर
लाला, जिससे हमें आदिवासी जीवन, सम्झौति, माधा और जीवन-भौमी
की लारे में खानकारी जीलती है। गोपीनाथ महंति जी ने जीवन का
आधिकांश समझ ठड़ीका के आदिवासी इलाजों में विताया। ठेक्षण
वं अपहोलित आदिवासीयों के प्रयोग संलेख में वे आर्य और उन्हें
वज्रीक एं देखा, जाना, समझा तथा मध्यसूक्ष्म लिया। उन्होंने देखा
कि कंपमूल वा बगांझी कल रवाना के जीवित रहते हैं। इन्होंने
इलाज काफ़ी मानवीय गुणों से ग्रस्त रखा है। जाले गर्भेत
शरीर के अर्द्ध ही ड्याला व साक्ष-सुपरात् लक्ष्य था। विसे गोपीनाथ
वाहू हो गली-भाँति समझ लिया और उन्होंने अपने साहित्य में
उस लिङ्गायट लक्ष्य की आभियानिती भी है।

बधैर्दि गदानी का कथानक :-

बधैर्दि कथानक गोपीनाथ

महंति जी शुभ्रसिद्ध गदानी है। इसमें आदिवासी समझ की परिस्थिति
और मन; स्थिति जी प्रस्तुति जी गमी हैं। जीवन जी दागभाग्यों
ओर रवाती जा रही संवेदना और प्रृथक संस्ट जा रही जी
भाष-साध आदमस्कोर लाध जी प्रवृत्ति जी जनतंत्र प्रृष्ठकार
से सम्भानित जी जी जीतांत मधाप्रव ने बधैर्दि गदानी

ग्रामपाल कुरुक्षेत्र से सम्बन्धित कवि सीतांग मदाप्राप्त ने वहाँ
जाहाजी ५५ अपने विचार प्राप्त ग्रन्थ द्वारा है—“कोरापुण जी
पर्वत श्रीधरी के लीक रहने वाले आदिवासियों के जीवन में लाघु-
था लाधिन की उन्मत्तता के बहसे यारों तरफ विचेत्र भय ना
पाताप्रण था जाने और लोगों के घरों के दरवाजों के ही नाम
जी धरना लो गोपीनाथ जी वे गोतंक जी १०५८ ने समानंतर है।
भारी परिक्षण से जीवता के लाभदूष यह दूषक मतलापन और
जीवास्थापन के लिए प्रेरणा भय एवं लंबे हैं। इसके उभयाति,
मतवाली वाधिन जी तक ही है।”

वहाँ जाहाजी के पश्चिमी विचार और आस्तीन
संकट जी और संकट किया गया है। वहाँ के लिए मैं यह रहा हूँ।
आदिवासी समाज में लाघु जीवता उन्मत्ता और प्राप्ति के
बहसे यारों और भय और दृश्यता भरा पाताप्रण धारा
रहता है। ए और जहाँ वे लोग अपनी जान जी सुरक्षा में
जगे हुए थे तो इससे और अग्रे पशुओं के जीवन पर भी
संकट था। प्राचीन लाल थे जगत् में जीवास्थ जैसे ही आदिवासियों
जी सामाजिक और धार्मिक मानवताओं व प्रपातों के आधार-
पर गोपीनाथ मंदिर ने इस जाहाजी में उनकी जीवनियों—
जगजीरियों, सामर्थ्य और सीमाओं लो धूक्षम् व सहज सप्त से
उद्घाटित किया है।

वेदाई जाहाजी का भवित्वः—

गोपीनाथ मंदिर के द्वारा

वहाँ वेदाई जाहाजी आदिवासी जगजीरियों की व्यापारी विजाय
करने के साथ-साथ जी आदिवासी जाहाजी पशुओं
वाद्यम् से याता और समाज के स्वस्त्र जा छोड़िया उद्घाटित

व्यापक जन सरोकार की आवाजों और जन, खंड जनीन की अपेक्षाओं को परिभासित करती बैठक एक महत्वपूर्ण घटानी है।

आदिवासी जनजीवन का वितरण :-

बैठक घटानी में विशेष

समाज लेरवर्क के आए-पाए जा समाज है। इसके पार्श्व जनीन से छारे हैं, जो जीवन्त मृतीत दाते हैं। बैठक घटानी में विशेष जन्म नहीं है। बैठक नी जन्मी घटानी में जन्म के आतंक, आदिवासियों जा जन्म-शिकाय हैं। आजियान जैसी इन-आज घटनाओं के अतिरिक्त जन्म-जन्म नहीं हैं। इसी घटानी में गोपीनाथ महंति जी ने जन्म जा उल्लेख विविध पारिषेध में किया है। गोपीनाथ महंति दार्शन रचित चुप्रसिद्ध घटानी बैठक जा मूल संकेतन आदिवासी जनजीवन का वितरण है। इसमें इन और द्या, लगांग, गैती, खाड़ी, अस्तुजीयत, सत्यानिष्ठा, व्याजिनि विश्वास हैं तो दूसरी ओर शाखा, उत्पीड़न, धूल-कपट, दंग, अत्याचार आदि के जीवन्त वितरण परिभासित दाते हैं।

खल, खंगल और जनीन की अपेक्षाओं :-

प्राचुरिक

संतान आदिवासी अपने खंगल से बहुत प्रेम जाते हैं। खंगल की एका काना अपना अतिथि सभजते हैं। जानकारी ने आदिवासी जनजीवन के वितरण के माध्यम से परिवर्तन दिया की ओर इसार्ग किया है। बैठक घटानी में आदिवासी जन, खंगल और जनीन जो धर्मपरि ममते हैं, जी-हैं वे अपना जीवन मानते हैं। अके ज्ञाने इन्हीं तीक्ष्ण तत्त्वों को इस-विष्ट धूमते जाते हैं।

इसे संदर्भित करते हुए वह पॉडिट कहते हैं—“केपुडा मारी के साथ रहता है, मारी जो बात है, खाता है रखता है। अब जमीन पर लिही जी गांव बदला है, हम जो कही हैं।”

आदिवासी समाज के परंपराओं व मानवान्मो जा उद्धाटन—
वेदाः

वेदानी में चिह्नित धार्मिक ग्रन्थों आदिवासियों के परिवर्तन के विविध पक्षों जो परिभ्रषित करती हैं। वे भद्र हैं, सद्बुद्धता से किसी भरत को श्वीकार कर लेते हैं। कुंसाकार्त से ग्रासित हैं अच्युति डैटे पता नहीं कि एकाकार ज्ञा शिता है? शुर्तिपूज्यक हैं क्योंकि परंपरा से मूर्ति पूजा चली आ रही है। शुश्वर ही या हुँस्ख के निर्भित दृश्य से अपनी आत्मानिधारणि देवी के सामने जाते हैं। इनकी धार्मिक घोला जो सबसे बड़ी रूढ़ी अद्द है कि यह डैटे एकमध्य जाती है। सद्बुद्ध जीवन जा भूत्य समझाती हैं परम्परागत प्रेम भाव जो संवाधित जाती है। विपदाग्रस्त जी सदायता ज्ञाना आदिवासी अपार्वा धर्म अभिज्ञते हैं। जहाँ तक हो अके निष्काश सेवा जाते हैं। लोहि जी पड़ जिया अग्नि उससे चांड औ प्रेम भाव रखता है तो वे उसके प्रति पूर्व समर्पित हो जाते हैं। यदि लोहि उसे उत्ताप्त जाता है और आदिवासियों जो इसका पता चले तो वे वृत्तिक से जी आविक अवानक हो जाते हैं। वे अवेद द्वनेद, अपता और मानवता के उपारी हैं। भावत, लाल और वृथ अविलासी जी के लाली अवानक होते हैं। वे तभाश अव्यविच्छासों में झेंगे हैं। भिक्षा के खाने से बचते हैं। देवी और देवता के ज्ञ जो प्रकृति के विविध रूपों जो श्वीकार करते हैं। नगर जीवन की व्यवस्था दमक उन्हें पसंद नहीं है।

उपेक्षित, वंचित और शोषित :-

आदियों से शुरू सुविधा

से वंचित और गोपण के लिए १२३ आदिवासी समुदाय जो भारत में शामिल ना समाज माना जाता है। उनके साथीय जो भीक भारत के अंतर्गत ही रखा जाता है। डिया गढ़ी इनी इनी प्राचीन लाल जैही समाज के ६४ वंचित और शोषित लोगों के प्रति सदानुश्रुतियोंके और संकेनगलीज रही है। शुभाशी लालाराम गोपीनाथ महाते जी जाजजी लदानी लेखी इसी परिप्रेक्ष्य के प्रस्तुत जैही है।

बाध जी प्रतीकालकर्ता :-

आदिवासी समाज बाध के

प्रकार से आंकित है। बाध जी उभयों के बजते वारी और अध्ययन दृष्टिकोण जैसा वातावरण व्यापा रहता था। बाहिन ने पहले गोपी और जन-जन के बापत दो गोपी बद में इसने इसीनों का लिया जाना शुरू किया। बाध जी आदिवासी रपाला उसके विरोद्धी स्वामान जैसा प्रतिक है। आदिवासी समाज के लोग बाध जी की मनुष्य विरोद्धी वास्ति जो मारने के लिये संघर्षित प्रयत्न देते हैं। सामूहित प्रयास जैसे हैं। वृपासामर्थ उसे घुनाती देते हैं। आदियों से उनके मन में व्यापत आंकड़ों जो समाज करना चाहते हैं। भाषा के पालने एवं उन्हें खाली नहीं हैं। यह स्वतरनाल दोनों स्वेच्छापारिता जैसी भी प्रतिक है। नम्र और गोपण के आधार पर आगे आदिवासी पर आंतर उभयों वाले शास्त्र जैसा भी प्रतिक है। वृपासामर्थ उसे घुनाती देते हैं। आदियों से अनेक मन में व्यापत आंकड़ों जो समाज करना चाहते हैं।

उपोक्ति, वंचित और शोषितः—

सादियों से छुरख सुविधा

से वंचित और शोषण के भीलार २६ आदिवासी समुदाय जो आहेत में घागीचा ला समाज माना जाता है। उनके साहेब जो लोक आहेत के अंतर्गत जो १२वा जाता है। डोडिया गांवी अपनी प्रांगणिक जाति ये ही समाज के ६८ वंचित और शोषित जो के प्रति सदाचुक्तिगती और संवेदनशील ही है। चुप्रापीष लगानी गोपीनाथ मंडती जी लाभजनी जानी वेद्य इसी परिप्रेक्ष्य ने प्रस्तुत जूते हैं।

बाध जी प्रतीकाभिकर्ताः—

आदिवासी समाज बाध ने

प्रकोप से आतंकित है। १९५८ ने डॉ-भट्टा जी वर्षते वारी और अध्ययन विद्यालय ला जातावरण वाचा रह्या था। वाहिन ने पृथक गांव अंसं खन-खन में भाग्य दो जाता भद्र जो उसने इमानों ला भीलार ज्ञान शुद्धिभाग बाध ला आयी है। उसने उसी विरोधी स्वामाप ला प्रतिक्रिया है। आदिवासी समाज ने लोग बाध यारी भगुण्य विरोधी गांति जो भारने ने लिंग संघरण प्रभव दीत है। सामूहित प्रभासे गरते हैं। यथासामर्पि उसे घुणाती देते हैं। सादियों दो उनके मन में ध्यान आत्मा जो समाज करना चाहते हैं। भाषा के लिए उन हिंदून खाली नहीं हैं। यह खतरनाक धारी स्वेच्छपारिता ला जी प्रतिक्रिया है। १९५८ और गोपण के आधार पर आज आयी पर आंतर बरमाने वाले शासन ला जी प्रतिक्रिया है। यथासामर्पि उसे घुणाती देते हैं। सादियों से अने अन में ध्यान आंतर जो समाप्त करना चाहते हैं।

बाध की सर्वकालिकता और सार्वभौमिकता :-

पदा-निमार्ग

वे बाध की सर्वकालिकता और सार्वभौमिकता जो स्पष्ट रूपों में
किया गया है — "हर युग में हर भगवान् बाध विजया है
और उसके शिळार्थ किया है। संभार में जीतने दिनों तक मनुष्य
नाभ जा प्राप्ति जीत देता है, बाध नाभवारी खंडु जीता है, लिखी तो किसी
भगवान् आद्यों जो बाध रखा ही रहा था।" बाध जो आद्यों जो
रखाए उसके विशेषी स्वभाव जो प्रतीक है। बाध घास गहरी,
अद्यों रखाता है, जो गहरी जो खाद्य पर स्वी-स्वी हर युग
ही ज्यादात रही है। मनुष्य और मनुष्यता विशेषी राजतीयों जो
पराजित रहना किसी व्यक्ति विशेष के लिए संभव नहीं है।
आदिवासी समाज के लोग इस संकटप्रस्तुत घटनी के लिए
संघर्षकृत जीवन लीते हैं, सामूहिक प्रयास जाते हैं, अपासानकृ
ठसे परास्त जाने जो संकल्प लेते हैं।

समर्पितः एव यजते हैं ति गोपीनाथ मंदिरि जी
चुम्पसिद्ध लदानी वेदाई में आदिवासीयों के सामाजिक तपा
संस्कृतिके परिवर्तन जीवन जीवन गहराईयों के स्पंदन जो प्रस्तुत
किया जा रहा है। बाध जैसे प्रतीक जो माद्यम ये उन्होंने
समाज के व्यापारी जो अधिकारी रखा है। बाध हर युग
में हर देश में होता है। अपरित् बाध डायाय जो प्रतीक हैं
आदिवासीयों ने उस बाध जो विशेष किया है जो मनुष्य
समाज को अपने अधिकारी से वंचित रखता है। यह
अन्य बात है ति बाध जो मुखावला रखने जो लिए उन्हें
आवश्यक हो जीवन से वंचित रखता है। वेदाई ज्ञानी एवं सीधी-सारी
सद्ध, सरल, निष्ठापत आदिवासी जगतीजन जो सभी
रायायन हुआ है।

(5) लोकोनी कहानी संसार का सामाजिक परिवर्त्य देते हुए 'ओहरे तुम्हारे मेरे ' कहानी का महत्व स्पष्ट लाइज।

लोकोनी आखा को भारतीय सांविधान की काठी अमृतस्थी में शामिल किया गया। कोलंबी साहित्य का विवरण ५०० वर्षों से आविष्कार हुआ है। प्राचीन जात से लोकोनी लोकानन्दानि पढ़ी - दर-पाठी पलती आ रही है।

आधुनिक लोकोनी साहित्य के त्रुस्त्रात शौकोद्दिशा एवं सामाजिक से मानी जाती है। उनकी पहली जड़ी भाँड़ी का गोदम गोलिहू। इस कहानी में भीशु जा भाता के भूति प्रेम, भैरवावस्था, जा यथार्थ विकास हैं और भीशु की भाता के बिना दुर्घटना स्थिति का जड़ा-निकार ने अत्यंत मरम्पर्मी तरीके से प्रस्तुत किया है। अन्यलाभ एवं प्रासिद्ध लोकोनी जड़ी संग्रह है। इसमें ५ जड़ानीकारों की रूचि संकालित है। इन जड़ानीयों में लालार, मंगलर आदि जा वर्ष-तिथि स्पेशियल हुआ है, गोपा की रीति-नीति, चाल-वर्जन, आचार-विवाह आदि जा जी लोकोनी जड़ानीयों में जीवन स्थिरता हुआ है।

दोभोदर भीज लोकोनी के रूपात्मापत्र जड़ानीकार है। उनकी जड़ानीयों में लोकोनी समाज की आविष्का, सामाजिक, राजनीतिक स्पेशियलों जा यथार्थ विकार डार्क्स्प्रेस हुआ है। अत्यक्ष अमृतपूर्ण को आखार लगार उद्दाहारण गंधन, खागड़ाम, चुद खंसती जड़ी अंगूष्ठ किरवे हैं। प्रासिद्ध लेखन-प्रकार लंजी ते लोकोनी में चुनापरांत जा संपादन किया। उनकी जड़ानीयों सीधी-साड़ी आविष्कारिक विषयों पर आधारित होती है। ३-दोनों लिपन यथार्थ को अत्यंत विश्वसनीय ढंग से प्रस्तु किया। उनकी जड़ानीयों सीधी-साड़ी आविष्कारिक विषयों पर आधारित होती है।

उन्होंने जीवन चर्चाएँ ने अतिरिक्त विश्वसनीय दृष्टि से प्रकृति किया। कल्पिकों आर्द्धों के लिए संतुष्ट वृक्षों वे जीवों गहनी भगवत् औ नई विश्वा प्रदान ने 1907 के इतिहास की गहनीयों गोपनीयों के ग्रन्थियों जीवन की आधा-आनंदिकाओं, सपनों की और खिलनावाओं ला दितां गहनी हैं उनी गहनी औपचालिक दृष्टि है औ वे दृष्टियों हैं साहित्य अकादमी पुस्तकार्थ और सरस्वती सम्मेलन के सम्बन्धों लिए सुप्रासिद्ध लेखन महाबलेश्वर सेल की भवुत गहनी संग्रह 'तरंगा' की गहनी जीवासाहित्य की अनमोल धरोहर हैं जो गहनी के विषय में गवाह ने जोग जा १०८, ए-१८. मान्द्रो जा ५०३ की आतंक दलारी जेलों, जैसे नाईक जा एक अकादमी, और विज्ञो गोम्बस का अन्त वोदीता वोदीना, रामज्ञाना भुवारणा जैसे शामचेओ रवेशरो, एन. ऐव१८ जा गुलशन आदि गहनी संग्रह जी महत्वपूर्ण ग्रन्थियां रही हैं।

कोंडी गहनी जारी के माहिला गदानीगारों की संरक्षण गोपनीय है। परंतु इन महिला गदानीगारों की स्थानाधारिता अत्यंत महत्वपूर्ण है। विषां लाकोडलर की डीएस-पवित्रा, ऑडरै चुरंगम भर्ते; भीला काजांबनार की भेंगी, छवी; जमाला दालाइट की कपासो, डंकपार मारी; हेट नाईक की फसलें; जंयती लाईक की गणि आदि उल्लेखनीय गहनीयों ने जीवों का प्रा-साहित्य की समृद्धि किया। इन गहनीयों में स्त्री जीवन के साप-साप उससे जुड़ी पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं को विश्वसनीयता के साप डृष्टि किया गया। परंतु इन महिला गदानीगारों की स्थानाधारिता अत्यंत महत्वपूर्ण है। विषां लाकोडलर की डीएस-पवित्रा, ऑडरै की कपासों डंकपार मीरी, स्त्री जीवन के साप-साप उससे चढ़ी हुई परंतु एन. महिला गदानीगारों की डीएस-पवित्रा है।

कानूनी ज्ञानी खगोल में माहिला जटानीकरों की सहजांतरण सीमित है। परंतु इस माहिला जटानीकरों की स्वतन्त्रता अधिकतम है। जीवा जटानीकरों की डोकर यवना, आडरे-पुरुंगान भी हैं; गीला जोलांगर की भूमि, धर्मी, जयमाला दानादात की कपासों, कंफर भौमी; हेता नाईक की फसलें; जपानी लाईन की गप्टी आदि उत्तरवर्षीय जटानीकरों ने कानूनी ज्ञान साहित्य को समृद्ध किया है जटानीकरों में कई जीवन के साप-साप उत्तरे पुरुषी पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं की विश्वसनीयता के साप उद्घाटित किया गया।

ओडरे-पुरुंगान भेरे.... कानूनी का अवलोग :-

जीवा जटानीकरों की ओडरे-पुरुंगान भेरे... कानूनी मार्त्ती बलन के अंतर्भूत की व्यवाय और निःस्तान मारुक्कुर की विवरण जी आभिव्यक्ति के साप-साप मानवीय संवेदनों से ओप्पोत पारिवारिक संस्थना, सामाजिक संकारों पर्फ आवाजाओं को लीन अपवित्र प्रति लागती हैं।

मार्त्ती बलन के अंतर्भूत की व्यवायः—

जीवा जटानीकरों की कानूनी ओडरे-पुरुंगान भेरे.... का लक्ष्य विवरण जटानीकरों है। इसमें मार्त्ती बलन के अंतर्भूत की व्यवाय है। भौ- जी भूत के लाद बलन रक्षा भन की भस्त्र विद्या और- अंतर्भूत की वेदना को जटानी के मानीकर साप से प्रभुत किया गया है।

निःस्तान भाव की विवरणता :-

ओडरे-पुरुंगान भेरे....
जटानी के निःस्तान भाव की मनवलीय उद्घाटित धर्मी

रात जो भौसी मुझे गदावी सुनाती थी। उस रात उसके मुझे पुरांगन की गदावी सुनाई। "हज था पुरांगन। मैंने आदा-आ।" एक दिन उसकी माँ पर गई। पुरांगन धोखले में अकेला रह गया। "पुरांगन की एक भौसी थी। उसके बड़ी भमता से उसे अपने पंखो लै सहारा दिया। उसे खार दिया। पाला-पौसा।

"अने भौसी से पूछा," भौसी उस पुरांगन की भौसी के अपने बत्के गही थे ज्यादा?"

"गही जान, रह दुई भी बड़ी बहनसीब।"

बालसुलभ मनोभाव जा पितांगन:-

गदावी में बालसुलभ मनोभाव जा यथार्थ पितांगन किया गया है। क्रो १०८८ क्रो १०८९ क्रो १०९० क्रो १०९१ अपनी जानपर में रहना और फिर मान बाना, लंतुर्जट देना यही तो जल्दा जा चुका होता है।

"पिताजी, ज्या गाले में अभी तक पारी हैं?"

"पिताजी, एक घाटे पुल पर भक्तियाँ पढ़ने जाऊँगे न?"

"संरंग जी अभी द्वारे ही साप रहे हैं?"

नारी जी भमता जा उद्धारन:-

आरतीप नारी जी भमता उसकी

सर्वश्रेष्ठ विशेषता है। भौसी मातृत्व जा सुख प्राप्त जर्ते के लिए वह अपनी दीवी के बटे जो साप ले जाती है। उस पर आम रहे हैं और भमता उड़ती है। "तब भौसी अपना जान छोड़ देती है। भौसी जो साप खलने में भर्ता आता है।

वह कुछ गोद में बिनारू वहा लेखियाँ हैं मेरा रखा हुआ देश
बनाना हैस्ती थी। जल्दीन एक जिन जौ रुद्र अवाना अपने पिताजी
के साथ चर वास्तव लौट आता है। उस गोरी की अधिति अंतमंत
भास्तीक ही रुकी है। काहिनारू के अतुर्जित की कल्पना वेदना और
वेदना का सार्थक विकास अनुर लिखा है।

मातृत्व भावना की प्रकाशनः—

ओडिरे -पुरंगन मेरे.... गदानी

मेरे मातृत्व की भावना जो तो महत्व दिया ही जाता है। इसके साथ-साथ
मातृदीन वर्षे के भौविकान जो भी वही विद्युत के साथ वितरा
जाता रहता है। वर्षे के लिए जो अवशुद्ध दृष्टि है। पिता के साथ
वैसा जग्गा, खुड़ाप या प्रेमादार वर्षे जो नहीं हो पाता है। जितना
कि भौं जे साथ दृष्टि है। मातृदीन वर्षे के लिए अवशुद्ध दृष्टि लदारा
है कि भौं जो अभियोग में इशा रक्षा। भौं के साथ विताये गये
एक-एक पल की अभियोग लितारा ही उठती है। यह गदानी जो
रुद्र अपनी जो से देहद प्रेम लखा है। उसे भौं जी गदी मद्भुत
दृष्टि है। भौं जो स्पन जाई दूखरा नहीं हो पाता है। इसके द्विजो—
थिया जैं भौं जी अभियोग भरी रहती है। "भौं, भौं दृष्टि है आरु
भौंसी, भौंसी ही रहती है। भौंसी भारी दृष्टि है जल्दीन भौं अवशिष्ट
भारी दृष्टि है।" मातृदीन वालक जे अंतमन जी गदर्हि फै
पठन— यह गदानी उसके दुःख-दृष्टि, गद-विमां और वेदना—
व्यापारों की वितरा जाती है।

परिष्पति व गनः। अधिति जो सूक्ष्म व अद्वितीयताः—

ओडिरे

पुरंगन मेरे.... गदानी मेरे जाखिला जे परिष्पति व गनः। अधिति
जो सूक्ष्म व अद्वितीयताः लिखा है।

माँ जी भात के दो बिंदु चुभरे थे। उसकी याद में मुझे लर-लार रोना आ रहा था। पिता जी बिंदु-लात सिर पर छप-रखके नंगे में छढ़े १६वें। ३-हैं देख जर तो मुझे माँ जी याद और जी सताती थी। हर रात भाँ मुझे बाल में लें और सोती थी। रात जो अनेक दी विश्वने पर लौट और मुझे लौटि आ गई। अंदरे में दृष्टि लंका कर के मैंने खोही इधर-उधर ८८०ल जर देखा, माँ नहीं थी। अब-अब पिता जी तो मुझे अपनी बगाल में चुला लें, इस आगा से पिता जी जो चुम्पारे के लिए मैंने मुझे खोला। पर मुझे उनके शशी जी सी आपाणी चुमाई। ३-हैं जी माँ जी याद आती रही, यह सोप जर में दिल्ली-दिल्ली जर रही लगा। औ...
उसी आफोडा जर के में धम्भ जै पिता जी के विश्वने पर आ धम्ला। ३-हैं मुझे जर के गले ल्पाया।

सारतल्ल ने रस में इस सज्जे है कि भीड़ा नामोदार
दे लोगी जधनी जो नपी निर्जन प्रवास में भद्रत्वपूर्व जूनिया
नियमाई की ओड़े चुकाना भेरे अन पर्हि प्रथान जधनी है। इसमें
मातृशिं भाला जी भीड़ा और व्यापा के साप-साप निःसाठां
पैसी जी पीड़ा लर-लार व्यापित हुई है। चुरवान जो पालन-
पोसन के लिए उसका ३५ खाता और उसके ५८पाँचन फूरी
जिंदगी चुमार देना भर्तपूर्वी तो है निःसाठ मातृशिं जा जींग रहे
सिंठान जी है। ओड़े चुकाना भेरे लोगी जधनी दाते हुई जी
कोपन लोगी भेजाज तज सीमित नहीं है। इसे जधनी जी भवदेना
और उसका फालन अवयंत व्यापक व विस्तृत है। यहाँ
सभाज में निःसाठ माता और मातृशिं भाला के घातिनियि वह
एक आरतीप सभाज में निःसाठ माता और मातृशिं भाला
के घातिनियि वह भासी और एक आरतीप है।

(6) वीवानाप नार्दिम जा परिचय देते हुए डनारी लहरी 'जनकी' नाई 'जा विश्वेषण गीता'

— करमीरी साहित्य के अतिथास में दो इसके प्रमाणपूर्वक हुए जिवान
एक वही बाल्कि एक बाल्कि जो मार्गदर्शित किया। ये दो भद्रानवीश्वाते
हैं — माता लल्लेश्वरी और वीवानाप नार्दिम। १-इनके तरफ सक्रमीरी
साहित्य की विश्वास १८८८ छद्दले दी १८८८ वहाँ ने लागत मार्गदर्शित की
जी परिवर्तित जर निया। वीवानाप नार्दिम करमीरी आधा के विश्वाते
साहित्यकार है। इनका घब्बे श्रीनगर के छुरन गाँव के
छोड़ अत्यंत साधारण परिवार में हुआ था। व्यपन में ही
पिता जी मृत्यु के बाद खाँ ने ही उनका भावल-पालन निया।
गरीबी झाँर नमाम मुख्तिलों के बावधान वीवानाप नार्दिम ते
ग्रेजुएट तक जी पराई नी। व्यपन से ही वे अल्प और
अच्छे इसरे संत गवियों के बीच ५८ ज्ञानपात्र जरहे थे।
जो अंतर्नाली गविताओं में भी परिभ्रान्ति होती है।
३१ दश दशित एक कविता — सुनहरे भ्रातृहिल तुल ने इसमें
३-है सर १९४६ में साहित्य अकादमी पुस्तकालय से सम्मानित
किया गया। उन्होंने अभ्यार्थ में प्रगतिशील लेखन संघ की
अमुषाई भी नी। न इसके अन्तर्गत अभ्यार्थी आधा
में अभ्यार्थी जी जिसी दंपुड़ी हुई है अल्कि उन्होंने हिन्दी-
ओर उर्दू में भी जात्यक लेख ही विभागार्थ गमलेश्वर जी के
वीवानाप नार्दिम जो अभ्यार्थी साहित्य जी देवदार नह हैं।

नार्दिम साहित्य का स्पन भ्रातिशील गवियों ने ३०७४ मध्ये
भाता है। इसमें लाई भंडेद नहीं है वे आधुनिक सुरु के प्रवर्तक
गवि भान भात हैं। वीवानाप नार्दिम जी गविता जब रामधारी
सिंह दिनार ने अनी तो उठे "तुम लोगों ने हंडी वालों से
नार्दिम लिन ले और असे हैं छोड़ अभ्यार्थी गवि लो बनार लड़त

१२ तसे ३८ अमरी कवि लगारु लुत वड अ-वाय गिर्हाए
 खदि को हिंदी में जाय रखा था इसके बाद आज लिंगरु से
 पहले नामों को साहित्य में उपयुक्त स्थान जिलता को भी आज
 मन में लिंग पलता था, जिससे को जलाता नहीं था वर्गाता परा"
 दीनानाथ नाडिनी कविताओं ने वहाँ के चुवाओं पर गदरा
 और दिया। उन्होंने कविताओं के माध्यम से चुवाओं में देशभ्रष्ट
 और अपनी माती के लिंग घार जी भावना के लिंग जगह-बगह
 पर शुश्रायरु आयोजित किया। उन्होंने लगारु में बांते के लिंग
 अनेक उल्लेखनीय गाँथ किया। गल जी उमीद झार नार था
 के साथ उन्होंने लगारियों को साम्नायित सौंदर्य, अपनी लही
 और लोगों से घार जा पाई सिखाया।

दीनानाथ नाडिनी आधा के पहले माघीनी लगारु है
 जिन्होंने वह सिक्के इस आधा के लगानी विधा में लिखते ही
 पर प्रवासन किया वहाँ प्राप्तिशील चेतना से भी पारित
 जाया। उन्होंने लगारी समाज के रखरख और वहाँ रहे
 लोगों की परंपरा को अपनी गदानियों में उद्धारित किया। उन्होंने
 के साथ-साथ दीनानाथ नाडिनी की गदानियों में अमीर विभाजन
 और आतंकवाद की समस्याओं का भी जलन प्रस्तुत हाती है।
 दीनानाथ नाडिनी नहीं है वह "विस ठार फतजाड़ और
 लकान आने के लाभद्वारा और भूलो जा साथ नहीं चाहते,
 नथ भूलो जी उमीद में लान जा दानन नहीं दाहते।
 तसी तरह उसे अपने वतन, अपनी लही, अपने लोगों के
 साथ धाँड़ने की जरूरत नहीं है। गल जी उमीद मत
 छोड़, गल देहरा दोगा।"

जपानी कार्ड लकड़ी जा विश्लेषण :-

दिनांक १५ जून १९८८

राष्ट्रीय जपानी कार्ड का महत्वपूर्ण लकड़ी है। जिसमें अलगावाद और सांस्कृतिक तातों पर प्रधार गते हुए जागतिकी सुरक्षा और आर्थिक की ओर संकेत तथा सामाजिक संहार्दि के लिए को उद्दीपित लिया गया है।

जपानी कार्ड जा महत्व

पहले बहु लोग इससे ज्ञान प्राप्त कर भवित्व के संबंध लकड़ी के तब अपने भेज गए प्रस्तुति के साथ जपानी कार्ड भी लगा देते थे। प्रत्येक भेजने वाला इसे पर लुद गई लिएकर लेने अपना पता लिख देता था। प्रत्येक वाले प्रस्तुति पाठे ही जपानी कार्ड पर जपान लिएकर वापसी भेज देता था। इसी प्रकार जपानी कार्ड संबंध के आदान-प्रदान में अपना महत्वपूर्ण शुभाग्रा का लिएकर जाता था।

सामाजिक सांदर्भ जा विवरण

जब जापानी का लकड़ी देश जा विभावने दुआ तो उसी अवसरे आवेदक विकास और विकास परिवर्तिति गतिर में देखी गई। जापानी का पालितान में ऐसे भा द्वितीयान में लिएकर भा लकड़ी व्यवस्था १६वें जा अवसरे प्रदान किया गया था। यही उसी जामाजिक सांस्कृतिक जागिर्दा में १९८८ उत्तर गई। जिसमें अलगावाद और सांस्कृतिक तातों का प्रवर्णन जा भीगा किया। इसी गतिर सामाजिकों को दृश्य गते के भवित्व से दिनांक नाहिय जो ने यसकी कार्ड लकड़ी में सामाजिक सांदर्भ और सांस्कृतिक लकड़ी की संपर्कों का प्रस्तुत किया।

जिसके अलगाववाद और सांख्यिक तातों को परमाणु जा रही
थिए। इसी गंभीर-समस्याओं को इस जन्म के महसूसों में बहुत
वाहिन भी ने खवाही और जदानी में आमा। ऐसा सांकेति ३१५ अप्रैल
तातों की अपेक्षा ने अधिक लिया थिया कि उद्य-उत्तर वाहिन
गाँव थे जडाई पर गए। उस दिन गाँव शहर के चारों-पक्षों तक
जिलने आये सबने झट-न-झट धैराहर दिया। जिसी में जुहरी
संघी दी। किसी ने काम के आग को अवाहर दिया, वही
अपने आप राज्यमें लाई थी, वास पाइत तो उस अवधि के
आश्रम से रक्षा खोते आए थे। किरण खण्ड १८ विडि जडाई के
बारे ने एवाना हुआ तो गाँव के आहे लोग यार गीत लगा
वोडने गए और खण्ड तक १८ विडि जडाई से ओवल एहो हो गया
वे लोग एके वही हो। इसके जडाई के बाजे अमुदाया का लोटी
की आपसी सौदाई जो परिपर्य भिल्हा हो।

अलगाव और सांख्यिक तातों पर प्रभाव

प्रभाव

खवाही और जदानी जो महसूस थह वही है कि युवा जाहिन
और जैसा कि उद्याहर नींवान जिस तरह जाहिन हुआ।
उल्लेख इसका महसूस इस समाज और वातावरण की दिल्लाने है
जो युवा जाहिन जैसे लोगों से बुड़ा है। युवा जाहिन तो इसमें
एक भाव्यम भाग है, उस समाज जो विवर जा हो तिल भाग
जरने के लिए। युवा जाहिन तो इसमें १५ आद्यम भाग है,
प्रे मौख्य एक लिपाही है जो अपने समाज की एक जल्दी
के लिए तैयार है। इसे अपने समाज परिवर्तनी के बारे
और लगाव के साथ-साथ उसकी युवकों को जीवनीकरण
की खवाही और जदानी में खुलते हुई है।

गुल साहब इसमें प्रतीक के रूप में मौजूद हैं जो अपने समाज जी जर्से के लिए | गुल साहब तो इसमें एक माध्यम प्रक्रिया है, उस समाज का प्रियंका जर्से के लिए | ०३८ साहब इसमें प्रतीक के रूप में मौजूद हैं जो अपने समाज जी रक्षा करने के लिए तैयार है | उसे अपने समाज के संरक्षण के लिए और लगाव के साथ-साथ उसकी सुरक्षा जो वायिवेकीय है | जवाबी नार्ट लघानी में व्यक्त हुई यह भावना अलगाववाद और संक्रदानी लानों पर प्रधार जर्से हुए अपने समाज जो उत्तीर्ण जर्से जो प्रभाव लगती है।

सर्वी आभ्युतो ना उद्धारन

गंगा में जड़-झुपुर्फ़ लिसी आलीपा, लिसी अधीज के लहरे में लाते जाते रहते हैं | इस तरह जी लातों जो उल्लेख जर्से जो मनसद यही है कि कै उसे बहुत चाहते हैं जैसा जी जून दृढ़ गुल साहब जो बहुत चाहती है वही लिसी जैसे चाहते हैं | जैसा डालीपा दूरा गुल साहब जो रखाई जवाबी नार्ट भिलता है | तो सभी जोग माधुरों द्वारा जाते हैं | परंतु लिसी में यह हिमत नहीं होती है कि उसे ममतिना दुर्ग के लहरे में जून दृढ़ जो बता सके।

"वास पंडित ने साहस लटोर का नार्ट जून दृढ़ जो पगा दिपा, यह.... जवाबी नार्ट.... लल.... पहुँचा.... परंतु.... रखाई है.... मालूम नहीं?"

जून दृढ़ जड़ हीकर रह गई, तीर के समान धीना-सप्ती ने नाठा नार्ट जून गपा था | उसके धीने-धीरे उसे रखाला और किर उसको आज-पहुँच देखने लगी...."

स्वायत्र विद्युत और परिवारिक

जवाही नाड़ी अधीनी जगती की

परिवितियों और विद्युतियों को प्रत्यक्ष जगती है। परिविति अधीनी जगती जो जगती से लाइ विभाग का समान आवलीय परिवेश में जी देखा जाए सकता है। सांप्रदायिक सोचिं युरे देश के लिए १९८८ है। पुराणी जनाज्ञ लिए लेके अपने में जिन्हें जन्म जन्म देखे के लिए चुरव-टुरव में आभिन देखा है। उसका विवरण लिए १९८८ है। विनानाय बादिं के द्वारा लिखित जवाही नाड़ी अधीनी जगती है। पुराणे आवलीय जनाज्ञ जो विवरण वापस लाने के लिए संघर्ष जा आयिं जाए है।

संक्षेप में यह सकते हैं कि विवानाय नाडिं की सुखासीनी नाड़ी जवाही नाड़ी माँ जो वात्यल्य, पारिवारिक पीड़ा, युरे गाँव के आवलीय दुःख और देशभागीत के द्विंदे के विषय विवरण देती है। विषय एक और जहाँ युरे गाँव के वासियों ने युरे जाए वात्यल्य युरक के ने २५२ की आवांडा, १५३ जनाज्ञ सिपाही के बारे जावे जा दुरव हैं तो दूसरी ओर १५३ माँ जो लिए गर्व जा विषय भी कि उसके बाटे ने २५२ की दृश्यां के लिए अपने प्राणों की आदुति दे ली है। १५४ अदानी ने लिए अधीनी जो जीवनों की जी भुक्तानी तक्तीर प्रेष जाए है अलंक संपूर्ण आवलीय परिवेश जो अपने में अमेचती है। जवाही नाड़ी नाड़ी के आवलीय से विनानाय नाडिं जी १५४ संदेश देते जी गोमिं जनाज्ञ जनाज्ञ युरें से जिन युरें जर रहे वाला एक युरे के लिए चुरव-टुरवः में विवरण जो साझेदार २५२ वाला युरेतः रातिप्रिय जनाज्ञ है।